RKSK
Rashtriya Kishor
Swasthya Karyakram
राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम

बात से बनती है बात

जानें हम साथ-साथ

सर ने क्यों बुलाया होगा ?
हम चल रहे हैं न, अभी पता चल जाएगा।
सर, हम अंदर आ सकते हैं ?
हां, हां, सब बच्चे अंदर आओ।
सर, आपने बुलाया था ?
हां, कल गांव में क्या किया तुम लोगों ने ?
नाटक।
मैं पूछ रहा हूं, कौन सा नाटक किया ? ये बात दिमाग में आई कहां से ? कौन था प्रमुख भूमिका में ?
सर, हम बच्चों की स्कूल न आने की समस्या हल करना चाहते थे। और सर, जुनैद ने..
हां सर, दर्शकों को बच्चों को रोज स्कूल भेजने संबंधी समझाइश मैंने दी। और नाटक बबली ने लिखा था।
वाह जुनैद, तुम और सबके सामने बोले ? बढ़िया। खुद पर भरोसा हो तो हर बात बन जाती है।
मैं चाहता हूं यह मुहिम जारी रखी जाए। यानी तुम अपने आसपास के परिवारों में जाकर बच्चों को स्कूल भेजने के लिए प्रेरित करो।
जी सर। पर हमारे मोहल्ले में तो कोई नहीं सुनेगा हमारी बात। घर की मुर्गी दाल बराबर।

सर, मैं कहूं पते की बात ? क्यों न हम एक–दूसरे के मोहल्ले में जाएं ? माधव के मोहल्ले में मैं और मेरे मोहल्ले में बबली।
तुमने बिलकुल पते की बात कही राजेश। इससे ज्यादा प्रभाव पड़ेगा।
सर, यदि स्कूल से कोई शिक्षक भी हमारे साथ चले तो ?
हां, उन्हें भी ले जा सकते हो। देखो बच्चो, तुमने बहुत अच्छी शुरूआत की है। अब यह प्रयास रूकना नहीं चाहिए।
सर, हम कल से ही जाएंगे।
हमें ऐसे समय जाना होगा जब माता– पिता घर पर मिलें।
तब तो शाम का समय ठीक रहेगा। मैं शिक्षकों के साथ तुम्हारी टीम बना देता हूं। उन्हें पता है कौन स्कूल नहीं आता। कल से अभियान शुरू कर देते हैं।
जी सर।
अगले दिन जुनैद और दवे मेडम गांव के एक मोहल्ले में जाते हैं।
मेडम, ये सरिता का घर है।
अच्छा। वह तो कई दिनों से स्कूल नहीं आ रही। चलो देखें कौन है घर में।
अरे सरिता, कैसी हो ?
मेडम आप ? नमस्ते।
नमस्ते सरिता। क्या हुआ, कई दिनों से तुम स्कूल नहीं आ रही।
तुम्हारी तबियत ठीक तो है ?

मैं तो ठीक हूं पर घर के काम...
स्कूल जाएगी तो इन छोटे भाई-बहनों को कौन संभालेगा? हम तो मजदूरी पर जाते हैं।
पर सरिता भी तो छोटी है। उस पर इतनी जिम्मेदारी ?
क्या करें, हम गरीब हैं। जैसे-तैसे मेहनत-मजदूरी करके कमाते हैं।
सरिता पढ़ेगी नहीं तो उसे भी जीवन भर यही सब करना पड़ेगा।
और पढ़-लिख गई तो अपने पैरों पर खड़ी हो सकेगी। आपकी मदद कर पाएगी।
आप सही कह रही हैं। पर ये बच्चे ?
हां, बच्चों के लिए आंगनवाड़ी है न ! इन्हें आंगनवाड़ी भेजो और सरिता को स्कूल। घर के कामों में सुबह-शाम मदद भी कर देगी। ठीक है ?
जी मेडम। मैं भी चाहती हूं सरिता खूब पढ़े। इसे मजदूरी न करना पड़े। कल से भेजूंगी।
सरिता, फिर कल मिलते हैं स्कूल में।

दूसरे मोहल्ले मे राजेश और खान सर जाते हैं। उन्हें राजू घर के बाहर खेलता हुआ मिलता है।

अरे राजू , तुम यहां खेल रहे हो ? कई दिनों से स्कूल क्यों नहीं आए ?

सर...सर...आप ? राजेश तुम ?? तुम लाए सर को ?

नमस्कार सर। आइए न !

नमस्कार। ये बताइए राजू कई दिन से स्कूल क्यों नहीं आ रहा है ?

नहीं सर। यह तो रोज स्कूल के लिए तैयार होकर निकलता है।

पर स्कूल से तो गायब है। रोज अनुपस्थिति लग रही है इसकी।

सर... सर...वो...मैं ...

हां, घबराओ नहीं राजू, सच बोल दो।

बोलता है या लगाऊं दो चांटें।

नहीं... नहीं... बच्चे मार से नहीं प्यार से समझते हैं। बताओ बेटा ।

सर, सर मैं कल से स्कूल आऊंगा। पक्का।

सर, अंदर आइए न। चाय लीजिए। आप पहली बार आए हैं।

नहीं नहीं, धन्यवाद। चाय फिर कभी।

तूने ही सर को बताया है न कि मैं स्कूल न जाकर सारा दिन खेलता रहता हूं ? देख लूंगा बेटा। कल अकेले में मिलना मुझे ।

हैं ???

राजेश को राजू अकेले में बुलाकर क्या करना चाहता है ?
क्या राजू की समस्या का हल निकल पाएगा ?
जानने के लिए पढ़िए अगला अंक।

पढ़ी गई कहानी के अनुसार, हम कुछ मुद्दों पर चर्चा करेंगे:

आत्मविश्वास

जुनैद में किस तरह का परिवर्तन आया ? कैसे ?

अपनी बात को रखने का तरीका

बबली ने सर के प्रस्ताव का समर्थन क्यों नहीं किया ?
मुहिम जारी रखने के लिए सबने क्या योजना बनाई ?

समझौता या बातचीत करना

बच्चों ने प्रिंसिपल सर की बात मानने के लिए अपनी ओर से क्या प्रस्ताव रखा ?
सरिता की मां को किस तरह मनाया ?

स्वस्थ और अस्वस्थ संबंध

सरिता और उसकी मां के बीच अब कैसा रिश्ता होगा ?
राजू को शक है कि राजेश ने उसकी शिकायत की। इसका उन दोनों की दोस्ती पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

याद रखने वाले मुख्य संदेश

आत्मविश्वास

- हमें अपनी बात को आत्मविश्वास के साथ कहना चाहिए। इससे बात का प्रभाव पड़ता है।
- आत्मविश्वास के साथ अपनी बात को तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है, साझा सहमति बनाने के लिए अन्य लोगों की मदद ली जा सकती है।
- असहमत होने पर किसी बात को तरीके से ना कहने के लिए भी आत्मविश्वास की जरूरत होती है।
- सामनेवाले की बात को महत्व देते हुए अपना पक्ष रखना चाहिए। इसके लिए जरूरी है उसकी बात को ध्यानपूर्वक सुना जाए।

समझौता या बातचीत करना

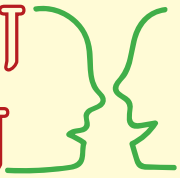

- बड़ों द्वारा कही गई हर बात हमेथा सही हो ऐसा जरूरी नहीं। ऐसे में अपना पक्ष रखकर बात करने को समझौता करना या निगोसिएशन कौशल कहते हैं।
- समझौता करते समय अपनी बात को शांत तरीके से, शालीनता के साथ और सुलझे ढंग से प्रस्तुत करें।
- एक ही कार्य को करने के कई तरीके हो सकते हैं। कार्य में बेहतर परिणाम लाने के लिए बात ऐसे करें कि आपका नजरिया स्पष्ट हो सके।

स्वस्थ और अस्वस्थ संबंध

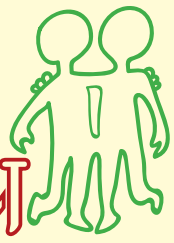

- हमारे आसपास के अधिकांश व्यक्तियों से हमारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संबंध होता है। स्वस्थ संबंध प्रायः स्वस्थ तरीके से संवाद करने पर बनते हैं। प्रयास करना चाहिए कि सभी से स्वस्थ संबंध बने रहें।
- संबंध बिगड़ने का प्रमुख कारण भी संवाद ही होता है। यदि किसी से संवाद हीनता या शक होने की स्थिति में संबंध अस्वस्थ हो रहे हों तो गलतफहमी को दूर करने का प्रयास करना चाहिए।
- संवाद के समय कोशिश करें कि आपकी ओर से संबंध बिगड़ने की नौबत न आए।

साथिया

भूमिकाएं और जिम्मेदारियां

- आशा की सहायता से गांव में 10 से 19 वर्ष की आयु के सभी किशोर/किशोरियों की सूची तैयार करना।
- स्वास्थ्य एवं संरक्षण के मुद्दों के संबंध में मिथकों और भ्रांतियों को दूर करने में किशोर/किशोरियों की सहायता करना।
- आशा/ए.एन.एम. की सहायता से आवश्यकता पड़ने पर चिकित्सीय व सुरक्षा संबंधी जरुरत में दूसरी जगह रेफर करवाना।
- किशोर/किशोरियों की बातों की हमेशा गोपनीयता बनाए रखना।
- बच्चों और किशोर/किशोरी पर हिंसा के मामलों को पुलिस या बाल संरक्षण अधिकारी को सूचित करना।
- हिंसा के शिकार व्यक्ति की चिकित्सा देखभाल एवं परामर्श लेने और कानूनी सहायता हासिल करने में सहायता करना।
- धर्म, जाति, वर्ग, जेंडर या वैवाहिक स्थिति पर विचार किए बिना सभी किशोर/किशोरियों तक पहुंचना।

पहला अंक

दूसरा अंक

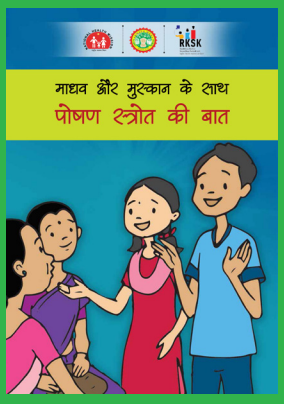

तीसरा अंक

चौथा अंक

UNFPA